प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 7 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक – 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जब मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहत्तर जीवन में अस्त्रों–शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बढ़ते रहने की प्रक्रिया को रोकना मनुष्यत्व का तकाजा। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास–बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरों के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जाने तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं।

1. प्राणिशास्त्रियों के अनुसार मनुष्य की पशुता कब लुप्त हो जाएगी? 2

उत्तर : प्राणिशास्त्रियों के अनुसार मनुष्य की पशुता उस दिन लुप्त हो जाएगी जब आदमी के नाखून उसकी पूँछ की तरह झड़ जाएँगे।

2. पशुत्व का द्योतक क्या है? 2

उत्तर : मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास ही बिना सिखाए–आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है।

3. मनुष्य का स्वधर्म क्या है? 2

उत्तर : अपने को संयत रखना और दूसरों के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है।

4. 'मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा' रेखांकित शब्द का अर्थ लिखिए। 1

उत्तर : मारने के अस्त्र।

5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : मनुष्यत्व का महत्त्व।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

ऋषि–मुनियों, साधु–संतो को,
नमन, उन्हें मेरा अभिनंदन।
जिनके तप से पूत हुई है,
भरत देश की स्वर्णिम माटी।
जिनके श्रम से चली आ रही,
युग–युग से अविरल परिपाटी।
जिनके संयम से शोभित है,
जन–जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्म–मंथन के हित,
जो असि–धारा पर चलते हैं।
पर–प्रकाश हित पिघल–पिघल कर,
मोम–दीप–सा जलते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनकर,
सँवर जाए जन–जन का जीवन।
सत्य–अहिंसा जिनके भूषण,
करुणामय है जिनकी वाणी।
जिनके चरणों से है पावन,
भारत की यह अमिट कहानी।
उनके ही आशिष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद–वंदन।

1. ऋषि मुनियों के उपदेशों को सुनकर लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है? 2

उत्तर : ऋषि–मुनियों के उपदेशों को सुनकर लोगों का जीवन सँवर जाता है।

2. 'असि–धारा पर चलते हैं', पंक्ति से कवि का क्या आशय है? 2

उत्तर : कवि का आशय है–जो भयानक कष्टों में जीते हैं।

3. भरत की माटी किस कारण से पवित्र कहलाती है? 1

उत्तर : भरत की माटी ऋषि–मुनियों के तप के कारण पवित्र कहलाती है।

4. 'आशीष' का क्या अर्थ है? 1

उत्तर : आशीर्वाद।

5. 'करुणामय है जिनकी वाणी' से कवि का क्या तात्पर्य है? 1

उत्तर : जो करुणा से भरी हुई वाणी में बोलते हैं।

अथवा

आज की यह सुबह है बहुत प्रीतिकर,
कह रही उठ नया काम कर, नाम कर।
जो अधूरी रही वह सुबह कल गई,
मान ले अब यही कुछ कमी रह गई,
ले नई ताजगी यह सुबह आ गई,
कह रही मीत–उठ, बात कर कुछ नई
ओ सृजन–दूत तू, शक्ति संभूत तू,
क्यों खड़ा राह में अश्व यों थाम कर,
दूसरों की बनाई डगर छोड़ दे,
तू नई राह पर कारवाँ मोड़ दे,
फोड़ दे तू शिलाएँ चुनौती भरी,
क्रूर अवरोध को निष्करूण तोड़ दे,
व्यर्थ जाने ना पाए महापर्व यह
जो स्वयं आ गया आज तेरी डगर।
अब नए मार्ग पर रथ नये हाँकने
हर अँधेरे से दीपक लगे झाँकने
बंद, अज्ञात थी आज तक जो दिशा
उस दिशा को नए नाम हैं बाँटने,
मोड़ लो सूर्य का रथ, विपथ पथ बने
बढ़ चलो विघ्न व्यवधान सब लाँघ कर।

1. आज की सुबह क्या पैगाम दे रही है?

उत्तर : सुबह का समय मनुष्य से कहता है कि सुबह सुन्दर है। हे मानव उठो और कोई काम करके नाम कमाओ।

2. कवि मानव को राह में खड़ा रहने पर क्यों प्रश्न करता है?

उत्तर : सुबह मानव से कहती है कि हे मानव तुम शक्तिप्रद हो, रास्ते में एक अश्व की रस्सी थामे सिर्फ खड़े मत रहो, दूसरों के रास्ते पर चलना छोड़कर, मानव को नई राह पर चलने का निर्देश देती है।

3. ताजगी भरी सुबह मानव से क्या कह रही है?

उत्तर : ताजगी भरी सुबह मानव से कहती है कि दोस्त उठो और उठकर कुछ काम करो।

4. 'हर अंधेरे से दीपक लगे झाँकने' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : अब सारी चुनौतियों का सामना करके मानव ने नई राह बनाई है तो कवि के अनुसार हर जगह जहाँ अँधेरा था वहाँ दीपक की रोशनी से रास्ते रोशन हो गये हैं।

5. कविता का सारांश एक दो पंक्तियों में लिखो।

उत्तर : जब मनुष्य कुछ काम करके अपना नाम कमा लेता है तो उसके सभी विरोधी भी उसकी उन्नति भरी राह देखकर उस मनुष्य का साथ देने लगते हैं।

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

अनुमान, अथाह, परिचालक

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	अनु	मान
2.	अ	थाह
3.	परि	चालक

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

मानवीय, घटिया, दूरस्थ

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	मानव	ईय
2.	घट	इया
3.	दूर	स्थ

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

गुरुदक्षिणा, महादेव, नवरस, मुखचंद्र

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	गुरु के लिए दक्षिणा	तत्पुरुष
2.	महान है जो देव अर्थात् शिवजी	बहुव्रीहि
3.	नव रसों का समाहार	द्विगु
4.	मुख रूपी चंद्र	कर्मधारय

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. यदि पेड़ों को काटने से रोका जाता तो प्रदूषण इतना न बढ़ता।

उत्तर : संकेतवाचक

2. आज के नेताजी की बात कौन सच मानेगा।

उत्तर : इच्छावाचक

3. आपको नववर्ष की बहुत–बहुत बधाइयाँ किसने दी।

उत्तर : प्रश्नवाचक

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. झूरी बैलों को मारता–पीटता था। (निषेधवाचक में)

उत्तर : झूरी बैलों को मारता–पीटता नहीं था।

2. यह उपहार बहुत कीमती और सुन्दर है। (विस्मयादिवाचक में)

उत्तर : ओह! यह उपहार बहुत कीमती और सुंदर है।

3. चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर जोर है। (इच्छावाचक में)

उत्तर : मैं चाहता हूँ कि चारों ओर उत्पादन बढ़ाने पर जोर हो।

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. मैया मैं नहीं माखन खायौ।

उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. नगन जड़ाती थी वे नगन जड़ाती है।

उत्तर : यमक अलंकार

3. रहिमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून।।

उत्तर : श्लेष अलंकार

4. सीता का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।

उत्तर : उपमा अलंकार

5. ले चला साथ मैं तुझे कनक,
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण–झनक।।

उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नजर से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वो प्रकृति की नजर से नहीं, आदमी की नजर से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई अपने कानों से पक्षियों की आवाज का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है?

1. सालिम अली पक्षियों को किन नजरों से देखते थे? 2

उत्तर : सालिम अली पक्षी–प्रेमी थे। वे पक्षियों की दुनिया को उनके आनंद को बनाए रखने के लिए देखते हैं। इसलिए वे पक्षियों को उन्हीं की नजरों से देखते हैं।

2. मनुष्य पक्षियों की मधुर आवाज सुनकर रोमांच का अनुभव क्यों नहीं कर सकता? 2

उत्तर : पक्षियों की भाषा को मनुष्य नहीं समझ सकता। पक्षी अपनी अनुभूति को जिन स्वरों या क्रियाओं से व्यक्त करता है, उसे समझना मनुष्य के लिए संभव नहीं। अतः वह पक्षियों की मधुर आवाज को सुनकर रोमांचित नहीं हो सकता।

3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है, इसके लेखक का नाम भी लिखिए। 1

उत्तर : पाठ–साँवले सपनों की याद, लेखक–जाबिर हुसैन।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. जनरल आउटरम का व्यक्तित्व क्रूरता व निर्दयता का परिचय देता है। कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए। 2

उत्तर : जनरल आउटरम अंग्रेजी सैनिक दल के जनरल थे। मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह अपने टूटे हुए राजमहल पर बैठकर थोड़ी देर के लिए रो ले जिससे कि उसका दिल हल्का हो जाए। परन्तु निर्दयी आउट. रम ने उसकी इच्छा को पूरा न किया और उसे तुरंत हथकड़ी पहनाकर गिरफ्तार कर लिया। इतना ही नहीं आउटरम ने नन्हीं मैना को आग में जलाकर मारने का क्रूर आदेश भी दिया।

2. पहाड़ के सर्वोच्च स्थान को कैसे सजाया गया था? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : तिब्बत में पहाड़ के सर्वोच्च स्थान को देवता का स्थान माना जाता था। उस स्थान को पत्थरों के ढेर, जानवरों के सींगों तथा रंगबिरंगे कपड़े की झंडियों से सजाया गया था।

3. हीरा और मोती के साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा था? 'दो बैलों की कथा' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

उत्तर : झूरी को छोड़कर हीरा और मोती के साथ सब जगह शोषण और अन्याय का व्यवहार हो रहा था। गया उन्हें जबरदस्ती ले गया था और उन्हें खेतों में जोतना चाहता था। साँड उन दोनों पर अकारण आक्रमण करना चाहता था। कांजीहौस में तो उन पर बहुत अन्याय हो रहा था।

4. 'गंदे से गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।' पंक्ति में छिपा व्यंग्य–'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : इस पंक्ति में यह व्यंग्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि गंदे आदमी भी अपनी छवि सुंदर बनाकर पेश करते हैं। वे तरह–तरह के सौन्दर्य–प्रसाधनों का प्रयोग करके अपनी गंदगी छिपाने का प्रयत्न करते हैं। वास्तविक अर्थ में गंदे आदमी भी अपने गंदे कामों को

छिपाकर, ऊपर से कुछ भले कार्य करके अपनी छवि अच्छी बनाए रखते हैं।

5. 'अंगुली छिपाने' और 'तलुआ घिसाने' का क्या आशय है? 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : 'अँगुली छिपाने' का आशय है–अपनी दुर्दशा को छिपाना, 'तलुआ घिसाने' का आशय है–अंदर–ही–अंदर क्षीण अथवा कमजोर होना। अपनी शक्तियों को नष्ट करना।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठी रहीं इसमें लहरियाँ।
नील तल में जो उगी है घास भूरी,
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा,
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे,
पी रहे चुपचाप पानी।
प्यास जाने कब बुझेगी।

1. सरोवर के जल में पड़ रहे सूर्य का प्रतिबिम्ब जल में कैसा दिखाई दे रहा है? वह आँखों पर क्या प्रभाव डालता है? 2

उत्तर : सरोवर के जल में सूर्य का प्रतिबिंब चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा जैसा दिखाई दे रहा है। सूर्य की किरणें प्रतिबिम्बित होकर सीधी आँखों में पड़ती हैं, जिससे आँखें बरबस चौंधिया जाती हैं।

2. सरोवर के किनारे पड़े पत्थर कैसे प्रतीत हो रहे हैं? 2

उत्तर : सरोवर के किनारे पड़े पत्थर ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, जैसे वे सरोवर के जल का पानी पीने आए हैं। काफी समय से वे इस तरह पड़े हैं मानो उनकी प्यास बुझ नहीं पा रही है।

3. प्रस्तुत काव्यांश किस कविता से लिया गया है? इसके रचयिता का नाम लिखिए। 1

उत्तर : कविता–'चंद्र गहना से लौटती बेर', रचयिता–केदारनाथ अग्रवाल।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. 'मेघ आए' कविता में हवा की गतिविधि एवं प्रभाव का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 2

उत्तर : 'मेघ आए' कविता में हवा को नाचती–गाती उत्साहमयी किशोरी नायिका के रूप में दिखाया गया है। वह मेघ रूपी मेहमान के आने से बहुत खुश है।

2. 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर बताइए कि कवि की कौन–सी इच्छा अधूरी रह गई? 2

उत्तर : कवि की यह इच्छा थी कि वह यमलोक जाकर यमराज का घर देख आए। वह बहुत दूर तक यमराज के घर की दिशा में चला भी। परन्तु उसके घर तक पहुँचना सम्भव न हो पाया। इसलिए कवि की यह इच्छा अधूरी रह गई।

3. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर लिखिए कि बच्चों को काम पर किन कारणों से जाना पड़ रहा है? 2

उत्तर : बच्चों के काम पर जाने का एकमात्र कारण उनकी मजबूरी रही होगी। या वे अनाथ होंगे या उनके माता–पिता बहुत गरीब, बेरोजगार, बीमार या लाचार होंगे। इसलिए उन्हें ही घर के लिए पैसा कमाने जाना होगा।

4. 'कैदी और कोकिला' पाठ में कवि ने कोयल की बोली कब और कहाँ सुनी? उसे सुनकर कवि को कैसा लगा? 2

उत्तर : कवि ने अँधेरी रात को जेल की बंद चार दीवारी में कोयल की बोली सुनी। उसे कोयल का स्वर सुनकर बहुत उत्साह मिला। उसे लगा कि जैसे कोई हमदर्द उसे प्रोत्साहन देने आया हो।

5. 'कैदी और कोकिला' पाठ के आधार पर लिखिए कि कवि किस–किस चीज को काली बताता है? 2

उत्तर : कवि कोयल, अँधेरी रात, अंग्रेजी शासन की करतूतें, कालकोठरी, टोपी, कंबल, लोहे की बेड़ी और यहाँ तक कि मन में उठने वाली कल्पनाओं को भी काली बताता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी? 2

उत्तर : लेखिका की परदादी लीक से हटकर चलने वाली महिला थी। उन्होंने लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी क्योंकि उस समय ऐसी मन्नत माँगना अत्यंत साहसपूर्ण कार्य था। वे स्वयं एक महिला थीं। उन्होंने महिला होकर स्वतंत्र जीवन जिया था तथा अपने जीवन में किसी प्रकार की रोक–टोक नहीं देखी थी, इसलिए एक महिला होना उनके लिए गर्व की बात थी।

2. विस्थापन की समस्या से आप क्या समझते हैं? 'माटी वाली' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : विस्थापन का अर्थ है– एक स्थान से उजड़कर दूसरे स्थान पर बसना। विस्थापन से सबसे बड़ी समस्या आती है– घर और रोजगार की। विस्थापित व्यक्ति कहाँ रहे? कौन–सा रोजगार करे? जिन लोगों को बुढ़ापे में

विस्थापित होना पड़ता है, उनकी तो मानो मौत ही हो जाती है। टिहरी बाँध बनाने के सिलसिले में हजारों परिवारों को खेती–बाड़ी, काम–धंधा, नौकरी, व्यापार और निश्चित मजदूरी छोड़नी पड़ी। इसलिए माटी वाली की पीड़ा को हम समझ सकते हैं।

3. बाँध बनने से क्या–क्या समस्याएँ आती हैं? क्या समस्याओं के कारण बाँध नहीं बनाना चाहिए? 'माटी वाली' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2

उत्तर : बाँध बनाने से अनेक गाँव उजड़ जाते हैं, गाँव वालों के सामने रोजी–रोटी की भी समस्या आती है। बाँध बनाने का काम हजारों गाँवों को बिजली–पानी प्रदान करने के लिए होता है। इसलिए इसे रोकना नहीं चाहिए। पहले गाँव वालों को बसाना चाहिए फिर बाँध बनाने का कार्य होना चाहिए।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) साक्षरता क्यों आवश्यक है?

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • साक्षरता का अर्थ • साक्षरता के अभाव में हानि • साक्षरता के लाभ • उपसंहार।

(2) भ्रष्टाचार या भारत में भ्रष्टाचार

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • भ्रष्टाचार का अर्थ • भ्रष्टाचार के मूल में शासन तंत्र • भ्रष्टाचार की क्या बात करें • भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय • उपसंहार

(3) स्वच्छता या 'स्वच्छ भारत अभियान'

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत • स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य • स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय • उपसंहार

उत्तर :

(1) साक्षरता क्यों आवश्यक है?

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • साक्षरता का अर्थ • साक्षरता के अभाव में हानि • साक्षरता के लाभ • उपसंहार।

1. **प्रस्तावना–** आज शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। पूर्ण शिक्षा न भी सही, क्योंकि महंगी, और विषम परिस्थितियों वाले युग में वह सभी के लिए शायद संभव भी नहीं, पर कम से कम साक्षर तो सभी हो ही सकते हैं। अर्थात् अक्षर–ज्ञान पाकर अपना काम तो सभी चला ही सकते हैं। इतना पढ़ना–लिखना तो हर आदमी के लिए बहुत जरूरी हो गया है कि व्यक्ति अपने पत्र आदि स्वयं पढ़–लिख सके। कहीं अंगूठा लगाने से पहले यह जान सके कि यह सब क्यों और किसलिए कर रहा है और उसके भविष्य के लिए वह उचित है या अनुचित जैसी सामान्य जानकारियों के लिए साक्षर होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत आवश्यक है। साक्षर व्यक्ति अपने आपको चुस्त–चालाक और धोखेबाज व्यक्तियों से बचा सकता है। इन्हीं बुनियादी तथ्यों के आलोक में आज सरकारी–गैर सरकारी अनेक स्तरों पर साक्षरता का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। शिक्षा सबका अधिकार है।
2. **साक्षरता का अर्थ–** 'साक्षरता' शब्द का सामान्य प्रचलित अर्थ क्या है, यह जानकर भी इसकी आवश्यकता पर विचार किया जा सकता है। 'साक्षरता' का सामान्य अर्थ है 'अक्षर ज्ञान' अर्थात् विशेष ज्ञान प्राप्त न होने पर भी कम से कम इतना ज्ञान तो हर व्यक्ति को रखना ही चाहिए कि वह किसी एक या अधिक भाषाओं के अक्षरों का ज्ञान अच्छी तरह रखता हो। उन अक्षरों को जोड़कर अपना नाम आदि पढ़–लिख सकता हो। 'साक्षरता' शब्द का अर्थ मात्र इतना ही है और इसी भावना से उसका प्रचार–प्रसार भी हो रहा है। निरक्षर व्यक्ति किसी महाजन से लेता तो मात्र 500 रु. है पर अँगूठा 5000 हजार पर लगवा लिया जाता है। जब इतनी रकम चुका पाना संभव नहीं होता तब पता चलता है कि वास्तविकता क्या है? उसके साथ कितना बड़ा धोखा हुआ है।
3. **सारक्षता के अभाव में हानि–** कई बार ऐसा भी हुआ है कि जमींदारों महाजनों ने लगान या कुछ कर्ज के बदले में किसी का खेत या घर तक गिरवी रखकर उस पर अंगूठा लगवा लिया। फिर धीरे–धीरे या तो उसको परिवार समेत बंधुआ मजदूर बन जाना पड़ा, या फिर सब छोड़–छाड़ पर चुपचाप भाग जाना पड़ा। इस प्रकार साक्षर न होने से न जाने कितने प्रकार के परिणाम बेचारे निरक्षर व्यक्ति भोग चुके हैं। साक्षरता उस प्रकार के दुष्परिणामों से बचने का एक मात्र अच्छा और उचित उपाय है।
4. **साक्षरता के लाभ–** साक्षर व्यक्ति अपनी चिट्ठी–पत्री तो स्वयं लिख–पढ़ ही सकता है, मनीऑर्डर फार्म भी खुद भर सकता है। आजकल कई प्रकार के फार्म भी भरते रहना पड़ता है। वे सब भी भर कर अपने पैसे बचा सकता है। मान लो तकनीकी कारणों से कोई फॉर्म खुद नहीं भर सकता, तो कम–से–कम यह तो जान ही सकता है कि जिससे भरवाया जा रहा है, वह सब–कुछ उसकी इच्छानुसार और ठीक ही भर रहा है या नहीं। आजकल कई चीजें पैकेट में बिकती हैं। उन पर कीमत, पैकेट बनाने और वस्तु के सुरक्षित रहने की तारीख आदि उस पर लिखी होती हैं। दवाइयों की पैकिंग पर भी यह अब लिखा रहता

है। साक्षर व्यक्ति खरीदते समय यह सब देखकर खरीद सकता है। निरक्षर को कई बार तारीख के बाद की वस्तु या दवा थमा दी जाती है। उसके खाने से अच्छे भले आदमी की जान भी जा सकती है। मरीज ऐसी दवा या टीका लगवाकर मर सकता है। साक्षर को ऐसा माल या दवा नहीं दी जा सकती है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि साक्षर होने के लाभ–ही–लाभ हैं। जब व्यक्ति इस प्रकार के लाभ पा लेता है तो फिर वह अपने बच्चों को अनपढ़ या निरक्षर नहीं रहने देता। स्वयं कष्ट उठा कर चाहेगा कि उसके बच्चे पढ़–लिख जाएँ। निरक्षर व्यक्तियों के साथ कई बार ऐसा हुआ है कि दूसरे व्यक्ति ने बताए गए पते की बजाय अपने घर या किसी परिचित का पता लिख दिया हो। इस प्रकार मनीऑर्डर भेजने वाले व्यक्ति ने तो भेज दिया पर पाने वाले को नहीं मिला, हो गई न गड़बड़। ऐसी गड़बड़ियों पर नजर रखकर अपने अन्य साथियों को बचाकर एक महत्वपूर्ण समाज–सेवा का कार्य कर सकता है।

5. **उपसंहार–** इस प्रकार आज के कम्प्यूटरीकृत युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए पहले अच्छी–से–अच्छी शिक्षा पाकर चौकन्ना–चुस्त और जागरूक रहने की आवश्यकता है। यदि ऐसा संभव न हो सके, तो कम–से–कम अपना और साथियों का हित साधने के लिए साक्षर होना परम आवश्यक है। इसके लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का लाभ उठाकर हम निरक्षर को यथासम्भव शीघ्र साक्षर बनकर स्वतंत्र राष्ट्र का स्वतंत्र–जागरूक नागरिक प्रमाणिक करने का प्रयास करना चाहिए।

(2) भ्रष्टाचार

या

भारत में भ्रष्टाचार

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • भ्रष्टाचार का अर्थ • भ्रष्टाचार के मूल में शासन तंत्र • भ्रष्टाचार की क्या बात करें • भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय • उपसंहार

1. **प्रस्तावना–** आधुनिक युग को भ्रष्टाचार का युग कहा जाए, तो अत्युक्ति न होगी। आज भ्रष्टाचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फैल चुका है। इसकी जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि समाज का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह पाया है।
2. **भ्रष्टाचार का अर्थ–** भ्रष्टाचार दो शब्दों के मेल से बना है– 'भ्रष्ट+आचार' अर्थात् ऐसा व्यवहार जो भ्रष्ट हो, जो समाज के लिए हानिप्रद हो। भ्रष्टाचार के मूल में मानव की स्वार्थ तथा लोभ वृत्ति है। आज प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक कमाकर सभी प्रकार के भौतिक सुखों का आनंद भोगना चाहता है धन की लालसा भ्रष्ट आचरण करने पर मजबूर कर देती है। वह उचित अनुचित की परवाह न करके मन की अनेक लालसाएँ उसके विवेक को कुंठित कर देती हैं। कबीर ने ठीक कहा है–

"मन सागर मनसा लहरि बूड़े बहे अनेक,
कहे कबीर ने बाचि है, जिनके ह्रदय विवेक।"

मानव का मन अत्यंत चंचल होता है जब वह उसे लोभ और लालच की जंजीरों में जकड़ लेता है तो मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है तथा उसे प्रत्येक बुरा कार्य भी अच्छा लगने लगता है। वह सामाजिक नियमों को तोड़कर, कानून का उल्लंघन करके केवल अपने स्वार्थ के लिए अनैतिक कर्मों की ओर प्रवृत्त हो जाता है। मानव–निर्माता नीतियों नियमों का उल्लंघन करना ही भ्रष्टाचार है।

3. **भ्रष्टाचार के मूल में शासन–तंत्र–** भ्रष्टाचार के मूल में शासनतंत्र बहुत हद तक उत्तरदायी है। ऊपर से नीचे तक सभी भ्रष्टाचारी हों तो भला कोई ईमानदार कैसे हो सकता है। आज भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हैं कि कोई भी अपराधी रिश्वत देकर छूट जाता है तथा निर्दोष को सजा भी हो सकती है। लोगों में न तो कानून का भय है और न ही सामाजिक दायित्व की भावना। देश के बड़े–से–बड़े नेता ही भ्रष्टाचार और घोटालों में लिप्त हों तो अन्य लोगों की क्या बात करें। विश्व के दूसरे देशों में ऐसी स्थिति नहीं है। वहाँ के लोग भ्रष्टाचारी नेता को सहन नहीं कर पाते। अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को एक घोटाले के कारण ही हार का सामना करना पड़ा था। भारत की इस स्थिति को देखकर हमें एक शायर का शेर याद आता है।

"बरबाद चमन को करने को,
बस एक ही उल्लू काफी था।
हर शाख पे उल्लू बैठा था,
अंजामें गुलिस्तां क्या होगा?"

भारत के कितने शीर्ष कोटि के नेता भ्रष्टाचार में लिप्त पाए गए। उनके बैंक खाते विदेशों में हैं। विदेशों में उन्होंने प्रोपर्टी बना ली है तथा भारत में भी बेनामी संपत्ति बना लीं। जब पकड़े गए तो विदेश भाग गए। कहते हैं न कि कभी तो कानून की गिरफ्त में आएँगे। जब उनके यहाँ सी.बी. आई के छापे पड़ते हैं तो उनके साथ के भ्रष्टाचारी नेता उनके बचाव में सफाई देने लगते हैं। सरकार को सत्ता के मद में चूर बताते हैं। अरे! कोई उनसे पूछे कि जब उन्होंने घोटाले किए थे तब वे भी वो सत्ता में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन थे।

4. **भ्रष्टाचार की क्या बात करें–** बाजार में सिंथेटिक दूध बेचा जा रहा है, नकली दवाओं की भरमार है, फलों और सब्जियों को भी रासायनिक पदार्थों द्वारा आकर्षण बनाकर बेचा जा रहा है, चाहे लोगों की जानें क्यों न चली जाएँ। तस्करी का सामान खुले आम बिकता है। अनेक बार उच्च अधिकारियों के संरक्षण में ही भ्रष्टाचार पनपता है। उनकी जेबें भरने के बाद किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं होती। किसी को सजा नहीं होती।

   'जिसकी लाठी उसकी भैंस' तथा 'बाप बड़ा न भइया सबसे बड़ा रुपया' वाली कहावतें चरितार्थ हो रही हैं।

5. **भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय–** भ्रष्टाचार को किस प्रकार दूर किया जाए यह गंभीर प्रश्न है। इसके लिए स्वच्छ प्रशासन तथा नियमों का कड़ाई से पालन हो। यदि 100–200 भ्रष्टाचारियों को कड़ी सजा मिल जाए, उनकी सारी संपत्ति चाहे वह चल हो अथवा अचल, उन्हें आजीवन कारावास हो जाए तभी शायद अन्य भ्रष्टाचारियों में भय व्याप्त होगा। इस नासूर बीमारी ने तो देश की जड़ें खोखली कर दी हैं। भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए युवा पीढ़ी को आगे आना होगा और एक भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए कृत संकल्प होना पड़ेगा।

6. **उपसंहार–** भ्रष्टाचार हमारे नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार से जुड़े लोग अपने स्वार्थ में अंधे होकर राष्ट्र का नाम बदनाम कर रहे हैं। अतः यह बेहद ही आवश्यक है कि हम भ्रष्टाचार के इस जहरीले सांप को कुचल डालें। साथ ही सरकार को भी भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे। जिससे हम एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत के सपने को सच कर सकें।

(3) स्वच्छता

या

'स्वच्छ भारत अभियान'

देश की सफाई एकमात्र सफाई कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है क्या इसमें नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है हमें इस मानसिकता को बदलना होगा–नरेंद्र मोदी।

संकेत–बिन्दु : प्रस्तावना • स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत • स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य • स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय • उपसंहार

1. **प्रस्तावना–** स्वच्छता न केवल हमारे घर, सड़क तक के लिए ही जरूरी नहीं होती है। यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। इससे न केवल हमारा घर–आँगन ही स्वच्छ रहेगा बल्कि पूरा देश ही स्वच्छ रहेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना स्वच्छ भारत अभियान जो कि हमारे देश के प्रत्येक गाँव और शहर में प्रारम्भ की गई है, जो देश के प्रत्येक गली गाँव की प्रत्येक सड़कों से लेकर शौचालय का निर्माण कराना और देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना ही इस अभियान का उद्देश्य है।

2. **स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत–** भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी की जयंती पर 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। माननीय मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर इस अभियान की शुरुआत की, स्वच्छ भारत अभियान के तहत 2 अक्टूबर 2014 को उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से इस अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। स्वच्छता को लेकर भारत की छवि बदलने के लिए श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को एक मुहिम से जोड़ने के लिए जन–आंदोलन बनाकर इसकी शुरुआत की।

3. **स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य–**
   1. खुले में शौच बंद करवाना जिसके कारण हर साल हजारों बच्चों की मौत हो जाती है।
   2. लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत, सामूहिक शौचालयों का निर्माण करवाना जिसमें 1 लाख 34 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे।
   3. लोगों की मानसिकता को बदलना उचित स्वच्छता का उपयोग करके।
   4. शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देना और सार्वजनिक जागरुकता को शुरु करना।
   5. गाँवों को साफ रखना।
   6. 2019 तक सभी घरों में पानी की पूर्ति सुनिश्चित करके गाँवों में पाइपलाइन लगवाना जिससे स्वच्छता बनी रहे।
   7. ग्राम पंचायत के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ट की अच्छी प्रबन्धन व्यवस्था सुनिश्चित करना।
   8. सड़के फुटपाथ और बस्तियाँ साफ रखना।
   9. साफ सफाई के जरिए सभी में स्वच्छता के प्रति जागरुकता पैदा करना।

4. **स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय–**
   1. शहरी विकास मंत्रालय,
   2. राज्य सरकार,
   3. ग्रामीण विकास मंत्रालय,

4. गैर सरकारी संगठन,
5. पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय,
6. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम व निगम,

इस प्रकार स्वच्छता अभियान में इन मंत्रालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

5. **उपसंहार–** जो परिवर्तन आप युग में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप पर लागू करें– महात्मा गाँधी।

आज स्वच्छता की जागरुकता मशाल सभी में पैदा होनी चाहिए। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के कार्यक्रम होने लगे हैं। स्वच्छता से न केवल हमारा तन साफ रहता है। हमारा मन भी साफ रहता है।

12. छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को पत्र लिखकर प्रातःकाल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए। 5

उत्तर :

सेक्टर– 5
शरण–भवन
जयपुर
दिनांक– 7 अगस्त, 2019
प्रिय अविनाश
स्नेह!

आशा है, तुम छात्रावास में बड़े आनंद से होंगे। तुम्हारी पढ़ाई भी सुचारू रूप से चल रही होगी। प्रिय अविनाश मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहता हूँ। तुम प्रतिदिन उठकर योगासन और प्राणायाम अवश्य किया करो। इससे तुम्हारी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति बढ़ेगी और तुम पूरे दिन ताजगी और फुर्ती का अनुभव करोगे। पहले तुम यह अभ्यास एक सप्ताह तक नियमित रूप से करके देखो। जरूर अंतर अनुभव होगा। इसके बाद मुझे अपना अनुभव बताना।

आशा है, मैं अगले सप्ताह बाद तुम्हारा पत्र प्राप्त करूँगा।

तुम्हारा बड़ा भाई
प्रियांश

अथवा

आपको विज्ञान का प्रोजेक्ट बनाना है उसके लिए आपके विद्यालय के पुस्तकालय में कोई विज्ञान–पत्रिका नहीं है। अतः प्रधानाचार्य से विज्ञान–पत्रिका मँगाने का अनुरोध करते हुए प्रार्थना–पत्र लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य
राजधानी विद्यालय
अशोक विहार, दिल्ली
विषय– विज्ञान–पत्रिका मँगाने हेतु।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का कक्षा नवीं–अ का विद्यार्थी हूँ। मुझे विज्ञान में गहरी रुचि है। मुझे विज्ञान का प्रोजेक्ट बनाना है। परन्तु जब भी मैं पुस्तकालय जाता हूँ तो वहाँ कोई विज्ञान–पत्रिका उपलब्ध नहीं होती है। मुझे विज्ञान का प्रोजेक्ट बनाने के लिए अच्छी पुस्तकों की आवश्यकता है जिनकी सहायता से मैं अपना विज्ञान–प्रोजेक्ट अच्छी तरह से बना सकूँ। अतः आपसे अनुरोध है कि जल्दी–से–जल्दी विद्यालय के पुस्तकालय में विज्ञान की अच्छी–अच्छी पत्रिकाएँ मँगाने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित
आपका आज्ञाकारी शिष्य
पारस शर्मा
IX–अ
दिनांक– 8 जुलाई, 2019

13. आप हाईस्कूल बोर्ड की परीक्षा में 96% अंक लाने पर पिताजी से लेपटॉप मँगाने के लिए वार्तालाप करते हुए संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

करण– पिताजी! आपने मुझसे वादा किया था कि मैं यदि हाईस्कूल बोर्ड की परीक्षा में बहुत अच्छे अंक लाऊँगा तो आप मुझे बहुत सुन्दर–सा उपहार देंगे।
पिताजी– हाँ बेटा! मुझे अच्छी तरह से अपना किया हुआ वादा याद है। मैं तुम्हारे परीक्षा परिणाम से बहुत प्रसन्न एवं संतुष्ट हूँ। बताओ तुम्हें क्या चाहिए?
करण– पिताजी! मुझे उपहार स्वरूप लेपटॉप चाहिए।
पिताजी– लेपटॉप ही क्यों और भी कोई चीज माँग सकते हो।
करण– अभी मैं 18 साल का नहीं हूँ। अतः बाइक तो चला नहीं सकता। इसलिए लेपटॉप से अच्छा कोई उपहार नहीं हो सकता।
पिताजी– लेपटॉप से तुम क्या–क्या काम कर सकते हो?
करण– लेपटॉप से बहुत सारे काम हो सकते हैं। जैसे– पढ़ाई से संबंधित प्रोजेक्ट वर्क के लिए इंटरनेट से सहायता ले सकता हूँ। नोट्स लिख सकता हूँ। अपने आगे के कोर्स के लिए जानकारी ले सकता हूँ, नई चीजों का ज्ञान प्राप्त कर सकता हूँ।

पिताजी– अच्छा, लेपटॉप इतना उपयोगी होता है। यह तो बहुत अच्छी बात है।

करण– मैं भी आपके साथ कम्प्यूटर सेंटर पर चलूँगा कि कौन–सा लेपटॉप लेना है।

पिताजी– हाँ, यही अच्छा रहेगा। तुम अपनी पसंद का लेपटॉप ले लेना।

अथवा

आपके विद्यालय से हॉकी टीम अन्तर प्रदेशीय हॉकी मैच खेलने के लिए जाएगी। आप अपने विद्यालय के हॉकी कोच से अपने चयन के लिए बात करते हुए संवाद लिखिए–

उत्तर :

अंगद– अध्यापक जी! नमस्ते।

अध्यापक जी– नमस्ते बेटा।

अंगद– अध्यापक जी! क्या अगले माह हमारे विद्यालय की हॉकी टीम अन्तर प्रदेशीय हॉकी मैच खेलने जाएगी?

अध्यापक जी– हाँ, अगले माह हमारे विद्यालय की हॉकी टीम प्रदेशीय स्तर का मैच खेलने जाएगी।

अंगद– अध्यापक जी! मैं बहुत अच्छी हॉकी खेलता हूँ। मैं भी इस मैच में भाग लेना चाहता हूँ। आप मेरा टैस्ट ले लें।

अध्यापक जी– ठीक है। 10 बजे हॉकी खेलने के मैदान में आ जाना। मैं तुम्हारा टैस्ट लूँगा

अंगद– जी, अध्यापक जी! रोहन 10 बजे हॉकी टैस्ट के लिए पहुँचता है। अध्यापक जी टैस्ट लेते हैं।

अध्यापक जी– शाबाश रोहन! तुम तो अच्छा खेल लेते हो! तुम्हें हॉकी खेलने के लिए चुन लेते हैं। अब रोज सवेरे 9 बजे से 11 बजे तक अभ्यास के लिए यहाँ आ जाना।

अंगद– जी, अध्यापक जी! मैं रोज सवेरे 9 बजे से 11 बजे तक अभ्यास के लिए आ जाऊँगा। खूब मेहनत करूँगा और अपने विद्यालय को प्रथम स्थान दिलवाऊँगा।

अध्यापक जी– बहुत अच्छा! मन में सच्ची लगन हो तो निरन्तर अभ्यास और एकाग्रता से जीत अवश्य मिलेगी।

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and p aper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.